स्त्री-पुरुषोंके अलंकार

सात्त्विक अलंकारोंकी श्रेष्ठता सम्बन्धी विवेचनसहित !

भूमिका

'फैशन'के नामपर आजकलकी स्त्रियां चूडियां नहीं पहनतीं एवं कुमकुमके स्थानपर बिन्दी लगाती हैं ! अधिकतर व्यक्तियोंके पहने हुए अलंकार अध्यात्मशास्त्रकी दृष्टिसे उचित नहीं होते । ऐसे तामसिक अलंकार धारण करनेवालोंको उन अलंकारोंसे आध्यात्मिक स्तरपर, अर्थात दैवी चैतन्य ग्रहण करनेकी दृष्टिसे लाभ नहीं होता । 'अलंकार अर्थात दैवी चैतन्य ग्रहण होने हेतु सहायक वस्तु', यह अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोण मनपर अंकित करना तथा समाजको सात्त्विक अलंकारोंके विषयमें जानकारी देना, इस ग्रन्थका प्रयोजन है ।

सामान्य व्यक्ति यह नहीं समझ सकता कि अलंकार पहननेसे सूक्ष्म स्तरपर वास्तवमें क्या घटित होता है । यह समझनेमें सक्षम सनातनके साधकोंद्वारा किए 'सूक्ष्म परीक्षण' एवं बनाए 'सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी चित्र', इस ग्रन्थकी एक अद्वितीयता है । सोनेकी सिकडी एवं अंगूठी, सात्त्विक एवं आसुरी अलंकार इत्यादिके सन्दर्भमें साधकोंद्वारा किए गए 'सूक्ष्मसम्बन्धी प्रयोग' सिखाते हैं कि अलंकारोंकी ओर आध्यात्मिक दृष्टिसे कैसे देखें ।

श्री गुरुचरणोंमें यही प्रार्थना है कि यह ग्रन्थ पढकर अलंकारोंके विषयमें सभीमें आध्यात्मिक दृष्टिकोणकी निर्मिति हो एवं अलंकाररूपी अनमोल देन देनेवाले हिन्दू धर्मकी महानताका सभीको बोध हो !

– संकलनकर्ता

ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. **किसे कौनसे अलंकार धारण करने चाहिए ?** १४

२. **व्यक्तित्वानुसार अलंकारोंका चयन** १५

३. **स्त्रियोंके अलंकार :** स्त्रियोंद्वारा अलंकार धारण करनेका महत्त्व १५

४. **पुरुषोंके अलंकार :** पुरुष वैराग्यरूपी शिवतत्त्वका दर्शक है एवं अलंकार आकर्षण का प्रतीक है, इसलिए पुरुष साधारणतः अलंकार नहीं पहनते १९

५. **स्त्री एवं पुरुषोंके अलंकार** २१

* सिकडी : असात्त्विक एसं सात्त्विक कलाकृतियुक्त स्वर्णकी सिकडी पहनकर किए गए सूक्ष्म स्तरीय प्रयोग २२

* अंगूठी : विविध चिह्नांकित अंगूठियोंसे प्राप्त चैतन्यकी मात्रा २४

* पुरुषोंका दाएं हाथकी तथा स्त्रियोंका बाएं हाथकी अनामिकामें अंगूठी पहनना उचित २७

* कलाईपर 'फ्रेण्डशिप बैण्ड' बांधनेकी अपेक्षा स्त्रियोंद्वारा चूडियां एवं पुरुषोंद्वारा स्वर्ण, चांदी, तांबेका कडा पहनना ३३

६. **शिशुओंके अलंकार :** बाली तथा कडा ३८

७. **अलंकारकी धातु और उसमें जडे रत्न** ३९

८. **अलंकारोंकी आवश्यकता तथा अनावश्यकता** ४०

* 'साधना' ही मनुष्यका वास्तविक अलंकार ! ४०

* साधना करते समय सूक्ष्म स्तरपर आनन्दप्राप्ति होनेके कारण स्थूल स्तरपर अलंकार धारण करनेकी इच्छा न होना ४१

* भाव हो, तो अलंकारोंकी आवश्यकता न होना ४२
* उन्नत पुरुषोंद्वारा अलंकार धारण करना अनावश्यक ४३
९. सात्त्विक एवं असात्त्विक अलंकार ४३
* शरीर एवं मन पर सात्त्विक एवं असात्त्विक अलंकारोंका परिणाम ४३
* सात्त्विक एवं असात्त्विक अलंकारोंके सन्दर्भमें सूक्ष्मसम्बन्धी प्रयोग ४४
* अलंकारोंकी सात्त्विकता बनाए रखने हेतु साधना आवश्यक ४७
१०. विविध प्रकारकी बलवान आसुरी शक्तियोंद्वारा अलंकारोंपर किए गए आक्रमणोंके लक्षण ४८
११. अलंकारोंकी शुद्धि ४९
११ अ. स्थूलसे शुद्धि – अलंकारोंको रीठेके पानीमें डुबोकर रखना ४९
११ आ. सूक्ष्मसे शुद्धि ४९
११ इ. अग्निशुद्धि ५९
१२. अलंकारोंकी सीमा ६०
* बलवान आसुरी शक्तियोंद्वारा सिद्धिके बलपर अलंकारोंपर कष्टदायक शक्तिका आवरण लाना और उनकी कार्यक्षमता घटाना ६०

आहारसम्बन्धी आध्यात्मिक दृष्टिकोण देनेवाला ग्रन्थ

सात्त्विक आहारका महत्त्व

* विषाक्त आहारके दुष्परिणाम एवं उपाय
* मांसाहार वर्जित होनेके विविध कारण
* विविध धर्मग्रन्थोंद्वारा मांसाहार का निषेध